यूको जयपुर मासिकी

जून 2021

यूको जयपुर मासिकी

संपादक मंडल	पृष्ठ परिचय
संरक्षण : श्री प्रदीप कुमार जैन महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख	जयपुर की हस्तकलाएँ : मुखपृष्ठ पर
प्रेरणा : श्री बी एस गुरूंग सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख	संपादक मंडल एवं पृष्ठ परिचय : 2
प्रेरणा : श्री एम एम दुगड़ सहायक महाप्रबंधक	ऋण वसूली / वैकल्पिक भुगतान माध्यमों का प्रसार : 3
	जून 2021 माह में व्यवसाय वृद्धि : 4
संपादक : डॉ सुधीर कुमार साहु मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)	तिमाही बैठक में नराकास प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरण : 5
	अंचल की शाखाओं के लिए हिंदी कार्यशालाएँ : 6
सहयोग	आंतेला शाखा को नया एटीएम : 7
श्री गगन गुप्ता मुख्य प्रबंधक (खुदरा ऋण केन्द्र)	अंचल कार्यालय में जन्मदिवस : 7
श्री धर्मवीर सिंह शेखावत मुख्य प्रबंधक (विधि)	इस माह के सेवानिवृत्त साथी : 7
श्री मनोज मंगल मुख्य प्रबंधक (ऋण)	अंचल कार्यालय की हिंदी कार्यशाला : 8
श्री पवन पुरोहित मुख्य प्रबंधक (ऋण निगरानी)	अभिमन्यु सिंह की कविता : पिता की बातें : 8
सुश्री रितु शर्मा वरिष्ठ प्रबंधक (कार्यनीति आयोजना)	
श्री अरविंद कुमार शर्मा वरिष्ठ प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)	जयपुर अंचल की शाखाएँ : इस बार महेश नगर : 9
सुश्री किरण मीणा वरिष्ठ प्रबंधक (वसूली)	
नितिन जैन प्रबंधक (खुदरा ऋण केन्द्र)	मुखपृष्ठ कथा : जयपुर की हस्तकलाएँ : 10-12
टेलीफोन : 0141-2446155 ई-मेल : zojaipur.ol@ucobank.co.in प्रकाशन तिथि : 17.04.2021	अंक : जून 2021

केवल आंतरिक वितरण हेतु।
इस पत्रिका के लेखकों के विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
पर्यावरण बचाएं – धरती बचाएं। मुद्रित प्रतियों पर निर्भरता घटाएँ।

जयपुर की हस्तकलाएँ

हस्तकलाओं के मामले में जयपुर को भारत की राजधानी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कई विशिष्ट कलाएँ ऐसी हैं जो दुनिया को जयपुर की अमूल्य देन हैं। कई हस्तकलाएँ प्राचीन राजस्थानी परंपरा का अंग हैं, जो प्रदेश की राजधानी में फली-फूली हैं। इसके अलावा भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक होने के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों की हस्तकलाओं को भी जयपुर में आश्रय और बाज़ार मिला है।

देखिए विस्तार से, पृष्ठ-9 पर

जून 2021 माह में ऋण वसूली

कुल वसूली : 981 खातों में 2434.84 लाख

शीर्ष 10 शाखाएँ : राशियाँ लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	वसूली
1	एमसीयू, जयपुर	2105	267.86
2	लालसोट	1118	267.30
3	गंगापुर सिटी	2889	256.02
4	एमआई रोड, जयपुर	0159	218.04
5	एनईआई, जयपुर	1796	155.02
6	आगरा रोड, जयपुर	0209	86.98
7	टोंक रोड, जयपुर	0793	85.03
8	वीकेआई, जयपुर	1965	75.99
9	नरैना	0323	65.26
10	जवाहर नगर, जयपुर	1552	62.67

जून 2021 माह में वैकल्पिक भुगतान माध्यमों का प्रसार

डिजिटल अपनाएँ अभियान : नये एटीएम कार्ड : जून 2021

क्र.	शाखा	शा. क्र.	नए एटीएम कार्ड
1	नरैना	0323	146
2	बरियल कलां	1085	96
3	सैंथल	0640	95
4	लहरी का बास	1650	85
5	बगरू	0457	81
6	बसवा	0725	79
7	कोटपुतली	0486	76
8	बनेती	0629	73
9	मुकुंदगढ़	0268	68
10	रेनवाल	0250	66

डिजिटल अपनाएँ अभियान : नये मोबाइल बैंकिंग : जून 2021

क्र.	शाखा	शा. क्र.	नये मोबाइल बैंकिंग
1	एन ई आई	1796	497
2	मिड कारपोरेट	2105	380
3	कुम्हेर	2592	321
4	महेश नगर	2259	311
5	गाँधी सर्कल	1385	211
6	निवारू	3197	206
7	गुदा गोरजी	2607	194
8	कानोता	3142	194
9	आगरा रोड	0209	183
10	भिवाड़ी	3326	178

जून 2021 माह के दौरान व्यवसाय में वृद्धि

कुल नये खुदरा ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

1	चिड़ावा	2842	111.57
2	सीकर	0160	97.80
3	झुंझुनू	1460	77.35
4	लालसोट	1118	74.30
5	रेनवाल	0250	61.18

यूको गृह ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	चिड़ावा	2842	75.00
2	झुंझुनू	1460	62.00
3	लालसोट	1118	48.00
4	भरतपुर	0248	45.00
5	रेनवाल	0250	40.00

यूको स्वर्ण ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	सीकर	0160	83.10
2	विद्या विहार, पिलानी	0150	40.73
3	चिड़ावा	2842	36.57
4	एमक्यू, पिलानी	0018	24.60
5	आमेर रोड, जयपुर	2044	22.58

यूको कार ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	लालसोट	1118	26.30
2	बांदीकुई	1089	15.00
3	महेश नगर, जयपुर	2259	9.00
4	जगतपुरा	2088	7.80
5	फुलेरा	1093	7.00

यूको शिक्षा ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	बनी पार्क, जयपुर	0376	7.50
2	विद्या विहार, पिलानी	0150	7.50
3	अजीतगढ़	2561	3.17
4	बी डी रोड, जयपुर	1002	2.83
5	झोटवाड़ा	2258	2.72

यूको वैक्सी सावधि जमा अभी तक : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	खातों की संख्या	जमा राशि
1	सिरसी रोड, जयपुर	2156	26	4,50,78,000
2	दौसा	0461	14	1,16,99,000
3	मालवीय नगर, अलवर	3235	17	1,09,12,807
4	गांधी सर्कल, जयपुर	1385	29	1,03,30,000
5	मानसरोवर, जयपुर	2096	26	65,09,000

जयपुर बैंक नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के यूको विजेताओं को प्रमाण-पत्रों का वितरण

विजेताओं की सूची

पंजाब नैशनल बैंक	काव्य लेखन	दीप्ति मौर्य : प्रोत्साहन	हार्दिक बधाई!
केनरा बैंक	चित्र देखो आलेख लिखो	रितु शर्मा : द्वितीय	
यूनियन बैंक ऑफ़	कार्टून संवाद लेखन	काव्या गौड़ : द्वितीय	
बैंक ऑफ बड़ौदा	यात्रा वृत्तांत लेखन	रितु शर्मा : प्रोत्साहन	
बैंक ऑफ़ इंडिया	एकल अभिनय	भाग्य श्री नीलम भारती : द्वितीय	
इंडियन ओवरसीज	अधूरी कहानी पूरी करो	यश मंगल : तृतीय	
नाबार्ड	समाचार वाचन	काव्या गौड़ : द्वितीय	
इंडियन बैंक	वर्ग पहेली	यश मंगल : प्रोत्साहन	
लॉयंस क्लब, जयपुर	दीपावली पूजन	निशा गुप्ता : तृतीय	
कुल 9 पुरस्कार : 4 द्वितीय, 2 तृतीय, 3 प्रोत्साहन			

सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई!

अंचल कार्यालय की तिमाही बैठक संपन्न

अंचल की शाखाओं के लिए हिंदी कार्यशालाएँ

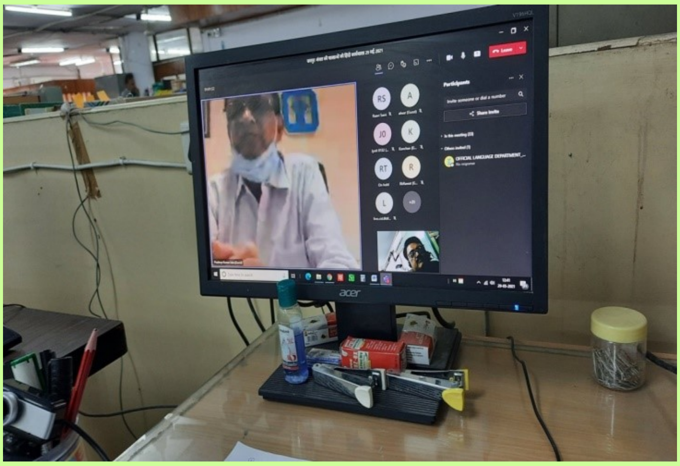

यूको बैंक के जयपुर अंचल की शाखाओं के लिए दिनांक 29 मई 2021 को आयोजित ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला में 12 शाखाओं के 45 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भागीदारी की। मुख्य प्रबंधक डॉ सुधीर कुमार साहु ने प्रतिभागियों को कंप्यूटरों एवं मोबाइल में हिंदी टंकण सहित राजभाषा से संबंधित सभी विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला को प्रारंभ एवं अंत में महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन ने संबोधित किया। यह कार्यशाला विशेष रूप से उन शाखाओं के लिए आयोजित की गई थी, जिनका मई 2021 माह में राजभाषायी निरीक्षण किया गया था। कार्यशाला में निरीक्षण के दौरान शाखाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए कागजात के आधार पर उनके कार्यों की समीक्षा भी की गई। साथ ही, निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को जल्द से जल्द दूर करने के संबंध में जरूरी जानकारियां भी दी गईं।

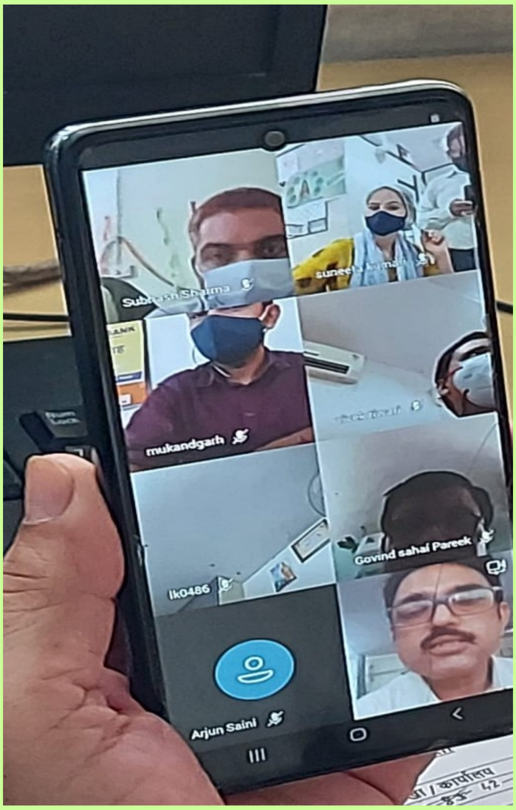

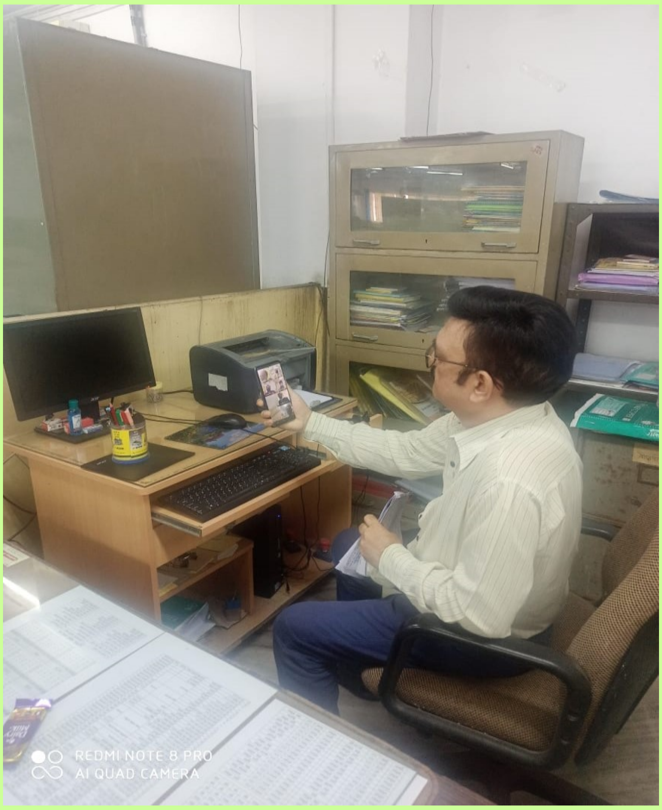

यूको बैंक के जयपुर अंचल की शाखाओं के लिए दिनांक 25 जून 2021 को आयोजित ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला में 15 शाखाओं के 58 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भागीदारी की। मुख्य प्रबंधक डॉ सुधीर कुमार साहु ने प्रतिभागियों को कंप्यूटरों एवं मोबाइल में हिंदी टंकण सहित राजभाषा से संबंधित सभी विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया। यह कार्यशाला विशेष रूप से उन शाखाओं के लिए आयोजित की गई थी, जिनका जून 2021 माह में राजभाषायी निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण के दौरान शाखाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए कागजात के आधार पर उनके कार्यों की समीक्षा भी की गई और निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को जल्द से जल्द दूर करने के संबंध में जरूरी जानकारियां भी दी गईं। कार्यशाला को प्रारंभ एवं अंत में महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन ने संबोधित किया।

आंतेला शाखा में नये एटीएम का शुभारंभ

अंचल कार्यालय में जन्मदिवस

श्री सुनील कुमार, विपणन का जन्मदिवस

30 जून 2021 को सेवानिवृत्त साथी

श्री गोविन्द सहाय पारीक	26780	सहायक प्रबंधक	बनेठी
मो एच सफी	34279	दफ्तरी	झोटवाड़ा
श्री सी एल मीना	43158	मुख्य रोकड़िया-2	पंडितपुरा

अंचल कार्यालय की हिंदी कार्यशाला

जुलाई-दिसंबर 2021 तिमाही के दौरान 19 जून 2021 को अंचल कार्यालय के अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें अंचल कार्यालय के 19 अधिकारियों ने भागीदारी की) इसे उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन के अलावा सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री बी एस गुरूंग एवं मुख्य प्रबंधक श्री एम एम दुग्गड़ ने भी संबोधित किया। मुख्य प्रबंधक राजभाषा ने अंचल कार्यालय के सभी कार्यपालकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी नियमों का पालन करने और आंतरिक कामकाज एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग के लक्ष्यों को प्राप्त करने से संबंधित सभी विषयों पर ताजा जानकारियों से अवगत कराया। अंत में अंचल प्रमुख महोदय ने अंचल कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सारा कामकाज हिंदी में करने और प्रत्येक विभाग से एक व्यक्ति को प्रधान कार्यालय की हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन योजना में भागीदारी करने की अपील की।

पिता की बातें

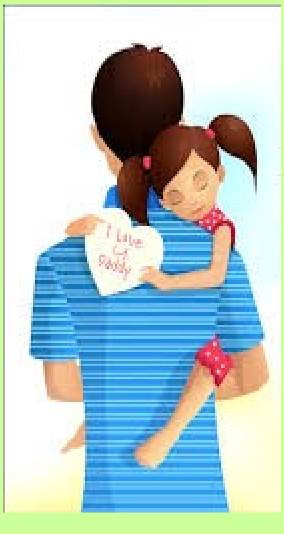

पिता अक्सर करते हैं मुहावरों में बात,
" बेटा, पैसे पेड़ पर नहीं उगते "
थोड़ा बुद्धि से भी काम लिया करो,
गधे-सी मेहनत से आदमी आगे नहीं बढ़ते।

पिता अकसर करते हैं अपने जमाने की बात,
" बेटा, जब मैं तेरी उम्र का था न! "
माने वो कहते हैं कि हाँ,
तुम्हारी पीढ़ी अधिक होशियार है।

पिता अकसर देते रहते है ताना,
" तुझे तेरी माँ ने बिगाड़ा है "
माने दुनियाँ बेदर्द है, मर्द बनो मर्द,
मेरे बाद ये बोझ तुझको उठाना है।

मगर कभी-कभी पिता रहते हैं नि:शब्द,
तब वे कुछ भी नहीं कहते
मगर उस वक़्त बोलती हैं उनकी आँखें,
"बेटा, मैं करता हूँ तुम्हें बेहद प्यार"।

पिता की ये बातें कभी मेरी समझ में आई नहीं
जब तक कि मैं खुद पिता नहीं बना।

अभिमन्यु सिंह
सहायक प्रबंधक
एमआई रोड शाखा
जयपुर

जयपुर अंचल की शाखाएँ : इस बार जयपुर की महेश नगर शाखा

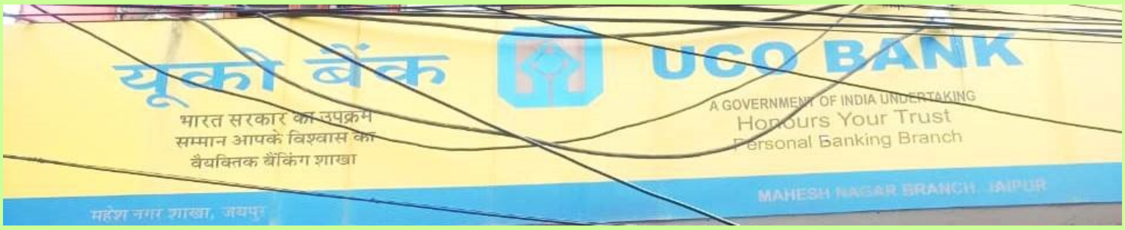

जयपुर शहर में बैंक की कुल 26 शाखाएं हैं, जिनमें से बनी पार्क शाखा रेलवे स्टेशन और चांदपोल बाज़ार से लगभग समान दूरी पर सुभाष नगर चौराहे पर आर्य स्क़्वायर नामक शानदार मॉल के परिसर में स्थित है। शाखा का मुख्य द्वार बाहर सड़क की ओर खुलता है। एक व्यस्त चौराहे पर होने के कारण ग्राहकों की आवाजाही आम तौर पर अधिक रहती है। इस शाखा से जयपुर का कचहरी परिसर केवल डेढ़ किलोमीटर दूर है, इसलिए यहाँ वकीलों और न्यायाधीशों के खाते बहुतायत में हैं। हालाँकि इस शाखा के कुल खातों में व्यवसायियों के खाते ही सबसे अधिक हैं। बनी पार्क, जयपुर शाखा के बारे में प्रमुख जानकारियां इस प्रकार हैं :-

(राशियां करोड़ रुपयों में)

कारोबार के क्षेत्र	31.03.2021 के कारोबारी लक्ष्य	31.03.2021 को स्थिति
कुल व्यवसाय	113.55	113.67
कुल जमा	97.35	93.87
कुल अग्रिम	16.21	19.80
रिटेल ऋण	11.88	13.52
एमएसएमई ऋण	5.31	8.08
कृषि क्षेत्र ऋण	0.27	0.05
प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र ऋण	11.25	13.64
नकद वसूली एवं उन्नयन	0.05	0.07

इनमें से

बचत एवं आवर्ती जमा खाते	संख्या : 6340	जमा राशि : 32.47 करोड़
सावधि जमा खाते	संख्या : 3351	जमा राशि : 56.59 करोड़
चालू जमा खाते	संख्या : 322	जमा राशि : 2.47 करोड़
ऋण खाते	संख्या : 196	शेष राशि : 14.22 करोड़
नकद साख (सीसी) खाते	संख्या : 72	शेष राशि : 3.92 करोड़

इस शाखा के टीम सदस्य 1. श्री राजेंद्र कुमार सैनी, वरिष्ठ प्रबंधक एवं शाखा प्रमुख, 2. सुश्री अनु बिश्नोई, प्रबंधक, 3. सुश्री प्रिया राठौड़, प्रबंधक, 4. सुश्री ज्योति, प्रधान खजांची, 5. श्री विनोद गुप्ता, विशेष सहायक, 6. श्रीमती राम स्नेही मीणा, दफ्तरी हैं। हम इस पत्रिका के मंच से शाखा के सभी सदस्यों के द्वारा किए गए कार्य की सराहना करते हैं और शाखा के सभी सदस्यों की ओर से अपने सम्माननीय ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

राजेन्द्र कुमार सैनी
वरिष्ठ प्रबंधक
शाखा प्रमुख
महेश नगर शाखा
जयपुर

मुखपृष्ठ कथा : जयपुर की हस्तकलाएँ.....

पूरा शहर ही एक विशाल कलाकृति है!

जयपुर घूमने आया कोई व्यक्ति अगर पूछे कि यहां से क्या खरीदना चाहिए, तो जवाब देना बहुत मुश्किल होगा। ऐसी चीजों की सूची इतनी लंबी है कि हैरानी होती है। यदि यह कहें कि जयपुर कलाकारों का शहर है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अगर आपके दिमाग में ये सवाल उभरे कि आखिर यहां के लोग इतने हुनरमंद कैसे हैं, तो जयपुर के जन्म की कहानी जान लीजिए। राजा सवाई जय सिंह बड़े ही कला प्रेमी थे। उन्होंने जब एक पूर्वनियोजित शहर बसाने की कल्पना की, तो सबसे पहले अलग-अलग कलाओं में माहिर कारीगरों को दूर-दूर से बुलाकर बसाया। सबसे बड़े कलाकार तो खुद वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य ही थे, जिन्हें नये शहर का नक्शा बनाकर परकोटे के भीतर एक सुरक्षित और सुंदर शहर बसाने का जिम्मा सौंपा। इस शहर के वास्तु के बारे में पुरानी कहावत रही है कि पूरे शहर को सूत से नाप लीजिये, नाप-जोख में एक बाल के बराबर भी फ़र्क नहीं मिलेगा। आज के आधुनिक वास्तुकार भी यह स्वीकार करते हैं कि एक जयपुर के परकोटे के भीतर के पूरे पुराने शहर की बसाहट वास्तुकला का एक नायाब नमूना है, जिसे आधुनिक तकनीक से नापने पर भी एक सेंटीमीटर तक का अंतर नहीं मिलता। इसी कारण जयपुर को भारत का पेरिस कहा जाता है। लम्बी चौडी और ऊंची प्राचीर तीन ओर फ़ैली पर्वतमाला सीधे सपाट राजमार्ग गलियां चौराहे चौपड भव्य राजप्रसाद, मंदिर और हवेली, बाग बगीचे,जलाशय और गुलाबी आभा से सजा यह शहर इन्द्रपुरी का आभास देने लगता है। कलात्मकता के कारण ही यूनेस्को ने जयपुर के जंतर मंतर और पूरे परकोटा बाज़ार क्षेत्र को विश्व धरोहरों में शामिल किया है।

पूछिए क्या नहीं है यहाँ!

जयुपर अपने आप में अनूठा शहर है। यह शहर अनेक क्षेत्रों में अग्रणी है। यहाँ की हर चीज दर्शनीय लगती है। विभिन्न कलाओं में यह सर्वप्रथम है। जैसे : चित्रकला, शिल्पकला, वास्तुकला, हस्तकला आदि। जयपुर की विभिन्न कलाओं में हस्तकला का अपना अलग ही स्थान है। देश-विदेश की दुकानों में सजी छोटी-बड़ी मूर्तियाँ, लाख की चूड़ियाँ, जूतियाँ, लकड़ी के खिलौने और नाना प्रकार के सजावटी सामान जयपुर में ही बनाए जाते हैं। सलमा सितारे का काम, पेचवर्क की चादरें, सूट, दरियाँ आदि बनाने का काम यहाँ बड़े पैमाने पर होता है। सांगानेरी छपाई का काम भी मशहूर है। जयपुर के रौनक भरे बाजारों की दुकानें रंग बिरंगे सामानों से भरी हैं, जिनमें हथकरघा उत्पाद, बहुमूल्य पत्थर, हस्तकला से युक्त वनस्पति रंगों से बने वस्त्र, मीनाकारी आभूषण, पीतल का सजावटी सामान, राजस्थानी चित्रकला के नमूने, नागरा-मोजरी जूतियाँ, ब्लू पॉटरी, हाथीदांत के हस्तशिल्प और सफ़ेद संगमरमर की मूर्तियां आदि शामिल हैं। प्रसिद्ध बाजारों में जौहरी बाजार, बापू बाजार, नेहरू बाजार, चौड़ा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार और एम.आई. रोड के साथ लगे अन्य कई बाजार हैं। सिटी पैलेस में एक विशाल संग्राहलय है, जिसमें राजस्थानी पोशाकों व मुगलों तथा राजपूतों के हथियारों का बढ़िया संग्रह हैं। इसमें विभिन्न रंगों व आकारों की तराशी हुई मूठ वाली तलवारें भी हैं, जिनमें से कई मीनाकारी के जड़ाऊ काम व जवाहरातों से अलंकृत तथा शानदार जड़ी हुई म्यानों से युक्त हैं। महल में एक कलादीर्घा भी हैं जिसमें लघुचित्रों, कालीनों, शाही साजोसामान और अरबी, फारसी, लैटिन व संस्कृत में दुर्लभ खगोल विज्ञान की रचनाओं का उत्कृष्ट संग्रह है, जो सवाई जयसिंह द्वितीय ने जंतर मंतर (वेधशाला) बनवाने से पहले खगोल विज्ञान का विस्तृत अध्ययन करने के लिए दुनिया भर से जुटाई थी। पर्यटन-उद्योग के अलावा धातु, संगमरमर, वस्त्र छपाई, रत्न व आभूषण आदि अनेक हस्त-कला उत्पादों का निर्माण जयपुर के प्रमुख उद्योगों में शामिल हैं, जिनका कई देशों को निर्यात होता है।

मुखपृष्ठ कथा : जयपुर की हस्तकलाएँ.....

गृहसज्जा

जयपुर के दस्तकार गृहसज्जा से जुड़ा सामान बड़ी मात्रा में तैयार करते हैं। यहाँ के वंदनवार, हैंगर, पत्र-मंजूषा, रंगीन छतरियां, कपड़े के झूमर और लैम्प जैसे सामानों की कलात्मकता देखकर लोग लट्टू हो जाते हैं। घर सजाने के लिए यहां बांस से बहुत सी चीजें बनाई जाती हैं, जो बहुत खूबसूरत होती हैं और सस्ती भी पड़ती हैं। इन्हें घर में सजाने से न केवल घर की खूबसूरती बढ़ती है, बल्कि राजस्थानी संस्कृति की झलक भी दिखाई देती है। यहाँ के बेडशीट, पिलो कवर, कुशन कवर, परदे आदि कहाँ-कहाँ नहीं बिकते?

जयपुरी जूतियाँ

जयपुरी जूतियाँ पूरे राजस्थान में बनती हैं, जिनकी बनावट में बारीक अंतर होने के कारण उन्हें कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है। परम्परागत रूप से हाथ से होने वाली बारीक कढ़ाई के साथ-साथअब मशीनों से खूबसूरत डिजाइन की जूतियाँ भी बनने लगी हैं। अपने खास डिज़ाइन, मजबूती, महीन कलाकारी और खूबसूरती के कारण पूरे देश और दुनिया में जयपुरी नागरा जूतियों के लाखों दीवाने हैं। कीमतों के मामले में भी यह काफी किफायती होती हैं।

मुखौटे

जयपुर में विभिन्न प्रकार के मुखौटे तैयार किए जाते हैं, जिनकी मिट्टी, कपड़े और कागज से सजावट की जाती है। मिट्टी के मुखौटे प्रायः घरों को नजर लगने से बचाने के लिए तैयार किए जाते हैं, जो यहाँ की परंपरा का एक अंग हैं। आजकल धातु के मुखौटे भी प्रचलित हो रहे हैं।

गुलदान

जयपुर में कलात्मक गमले और गुलदान बनाए जाते हैं। सड़क के किनारे मिट्टी से बने सुंदर गमले देखे जा सकते हैं। देश भर की हस्तकला दीर्घाओं में प्रदर्शित चीनी मिट्टी, प्लास्टर ऑव पेरिस और मिट्टी से बने सुंदर और कलात्मक गुलदस्ते और गुलदान यहीं के बने होते हैं। चीनी मिट्टी के गुलदानों पर रंगों की छटा देखते ही बनती है। ब्लू पॉटरी में तो यह कारीगरी और भी खिल उठती है।

पाकशाला पात्र

सिर्फ सजावटी पात्र ही नहीं, जयपुर के रसोईघरों में लजीज व्यंजनों की शोभा बढ़ाने वाले बर्तन भी बड़े कलात्मक होते हैं। पानी के घड़े और सुराहियां ही नहीं, मग, तवे, सकोरे, डोंगे, कटोरदान, मर्तबान आदि सभी तरह के बर्तन नामी दस्तकारों के हाथों से बने होते हैं।

ब्लूपॉटरी

जयपुर की हस्तकला में ब्लू पॉटरी काफी प्रसिद्ध है। चीनी मिट्टी के बर्तनों पर क्वार्ट्ज के रंगीन पाउडर से जो सजावट की जाती है, वह ब्लू पॉटरी के नाम से जानी जाती है। जब यही काम टाइल पर किया जाता है, तो इसे ब्लू टाइल कहा जाता है। इस कला में नीले रंग को विशेष महत्व दिया जाता है। लेकिन आजकल पीला, हरा, हल्का भूरा, और गहरा भूरा रंग भी काम में लिया जाता है। ब्लू पॉटरी की कई प्रदर्शनियाँ जयपुर के बिड़ला ऑडीटोरियम, जवाहर कला केन्द्र आदि विभिन्न स्थानों पर हमेशा लगी रहती हैं, जहाँ हर मौसम पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। ब्लू पॉटरी का प्रयोग बड़े-बड़े होटलों और घरों की बैठकों को सजाने में किया जाता है। ब्लूपॉटरी के अंतर्गत फूलदान, गमले, सुराहियों, लैम्पों, मटकियों आदि कलात्मक आकृतियों पर कारीगरी की जाती है।

मुखपृष्ठ कथा : जयपुर की हस्तकलाएँ.....

लेखा सामग्री में भी कलाकारी!

जयपुर की स्टेशनरी का सामान भी हस्तकला में शामिल है। सांगानेर में हाथ से तैयार किया हुआ कागज पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ साथ दिखने में भी खूबसूरत होता है। लाख के पेन, फाइलें, फोल्डर और होल्डर भी यहां बड़े पैमाने पर हाथों से तैयार किए जाते हैं।

लाख की चूड़ियाँ और कड़े-कंगन

आप जहाँ कहीं भी चले जाएँ, जयपुर की लाख से बनी चूड़ियाँ आपको दिख जाएँगी। लेकिन उनके जन्म के शहर यानी जयपुर में उन्हें खरीदने का अलग ही मजा है। लाख से बनी चूड़ियों का काम जयपुर शहर के त्रिपोलिया बाजार व मनिहारों की गली के आस-पास होता है। इस बारीक कारीगरी के काम को मुस्लिम महिलाओं के नाजुक और लचीले हाथ बड़ी तेजी और सफाई से करते हैं। इन चूडियों की कीमत 20 रुपये से लेकर 2000 तक होती है। सोने से बनी चूड़ियों में भी लाख का काम किया जाता है। पहले लोग लाख की मणियाँ बनाते थे फिर उनके हार बनाते थे। इस कारण वे 'मणिहार' कहलाते थे। अब मणियों के स्थान पर लाख की चूड़ियाँ ही बनती हैं। यही कारण है कि इसे 'लाखेरी' कला तथा इस काम को करने में लगे लोगों को 'लखारा' या 'लखेरे' कहा जाता है। लाख से बनी लाल व हरे रंग की चूड़ियाँ तीज, विवाह, जन्मोत्सव आदि विभिन्न त्यौहारों व अवसरों पर पहनी जाती हैं। इन चूड़ियों की माप अलग-अलग साईज में होती हैं, जिनके नाम भी दिलचस्प होते हैं, जैसे - पौने तीन, दो छः, दो तीन आदि। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि खराब होने के बाद इन्हें पुनः सुधारा जा सकता है। नगीने निकल जाने के बाद फिर से चिपकाए जा सकते हैं।

जयपुरी बंधेज की बहार

हस्तकला में ही बंधेज का अपना अलग ही स्थान है। जयपुर की बंधेज की साडियाँ, सूट, चुन्नियाँ पूरे देश की महिलाओं में प्रचलित हैं। छपाई करने के लिए पहले डिजाइन को इच्छानुसार कपड़े पर उतारा जाता है। फिर उंगली पर लोहे का खोल पहनकर कपड़े के डिजाइन वाले भाग को नोक पर उभार लिया जाता है। फिर उस भाग पर राल तथा मिट्टी में भिगोए डोरे लपेटे जाते है। यह काम बड़ी बारीकी से किया जाता है। यह डोरा इसलिए लपेटा जाता है कि जब कपड़े को रंग के घोल में डाला जाए तो डोरे के भीतर सुरक्षित कपड़े तक रंग नहीं पहुँच पाए। आजकल जयपुर के बंधेज का प्रचलन बहुत हो गया है। विदेशी पर्यटक भी यहाँ से बनी बंधेज के विभिन्न परिधान खरीद कर ले जाते हैं। बंधेज में अनगिनत रंग व डिजाइन उपलब्ध होने के कारण ये हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं और कोई भी बिना कुछ खरीदे नहीं रह पाता। हर पर्यटक को ये दिखती भी जरूर हैं, क्योंकि हर दर्शनीय स्थल पर इनकी कुछ दुकानें जरूर होती हैं। हवामहल के आस-पास तो इनकी अनेक दुकानें हैं। इसी कारण अगर किसी पर्यटक को जयपुर के मशहूर बाजारों में जाकर खरीदारी करने की फुरसत नहीं हो, तो भी वह बंधेज की खरीदारी कर सकता है। सूती के अलावा यह सिल्क में भी उपलब्ध है। परिधानों के अतिरिक्त जयपुरी बंधेज की पगडियाँ भी लोगों को आकर्षित करती हैं। राजस्थानी परम्परा में विवाह आदि अवसरों पर पगड़ियाँ जरूर पहनी जाती हैं, जो पहले विशेष रूप से गुलाबी रंग की होती थीं। आजकल इनका स्थान बंधेज पगड़ियों ने ले लिया है।